वन उत्पादकता संस्थान, रांची

“औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन”

वन विज्ञान केंद्र, हिजली, खड़गपुर

पश्चिम बंगाल

दिनांक : 24.08.2021

तकनीकी हस्तांतरण हेतु भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून द्वारा संचालित वन विज्ञान केंद्र के तहत दिनांक 24.08.2021 को वन उत्पादकता संस्थान, रांची के निदेशक डा.नितिन कुलकर्णी के सक्रिय पहल एवं समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा के सफल मार्गदर्शन में आभासीय मंच के माध्यम से पश्चिम बंगाल के विभिन्न प्रमण्डलों के संयुक्त वन प्रबंधन समिति के 68 सदस्यों के लिए संस्थान द्वारा “औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन (Cultivation, Management and Presentation of Medicinal Plants)” विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें प्रशिक्षुओं के अलावा भी लगभग 30-32 सदस्यो ने लाभ उठाया।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन संस्थान के वैज्ञानिक श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर द्वारा किया गया। इन्होने पश्चिम बंगाल के वन विज्ञान केंद्र हिजली खड़गपूर नोडल अधिकारी सह वन संरक्षक, हिजली राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय के निदेशक एवं विभिन्न 17 प्रमण्डलों के संयुक्त वन समिति के सदस्यों का “औषधीय पौध की खेती,प्रबंधन एवं प्रदर्शन” विषय पर प्रशिक्षण के लिए स्वागत किया।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में डा. नितिन कुलकर्णी ने पश्चिम बंगाल, वन विज्ञान केंद्र के तहत इस पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन हेतु डा. जोस. टी. मैथ्यू, (PCCF,CAMPA)West Bengal का स्वागत किया एवं उनकी भूमिका के लिए आभार व्यक्त किया एवं समस्त

प्रतिभागियों एवं आयोजन के सहयोग के लिए श्री अरुण मुखर्जी, सुश्री अनुसुया राय का स्वागत किया एवं बताया कि परिषद द्वारा बहुत जल्द सुकना केंद्र में एक वन विज्ञान केंद्र का स्थापना किये जाने के प्रयास जारी है । उन्होने इस पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम के आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया एवं बताया कि विषय की तकनीकी समझ के लिए संस्थान के ही वैज्ञानिक श्री अंशुमन दास द्वारा बंगला में अनुवाद किया जाएगा जो बंगाल के frontline staff के लिए मददगार होगा। डा. मैथ्यू का संस्थान से लगाव एवं विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने का जिक्र करते हुए उन्होने बताया कि वन उत्पादकता संस्थान के लिए पश्चिम बंगाल में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद द्वारा विकसित तकनीकी को हस्तांतरण करने में मैथ्यु साहब का योगदान अतुलनीय है। प्रतिभागियो से आग्रह किया कि जीविकोपार्जन में काफी सहायक औषधीय पौध उत्पादन तकनीकी का लाभ उठाएं एवं अपनी शंकाओं के समाधान हेतु हमारे संसाधन से सहयोग ले। औषधीय पौध की खेती तकनीक, प्रबंधन आप सबों के लिए सहायक सिद्ध होगा एवं शंकाओ के समाधान हेतु संस्थान का अवश्य सहयोग लें। उन्होने खुद से डा. जोस. टी. मैथ्यु को आशीर्वचन के लिए आमंत्रित किया।

मुख्य अतिथि डा. जोस. टी. मैथ्यु ने आभासीय मंच से कार्यक्रम का उद्‌घघाटन किया एवं अपने सम्बोधन में कहा कि पश्चिम बंगाल वन विभाग एवं वन उत्पादकता संस्थान,रांची वानिकी क्षेत्र में एक नया अध्याय लिखने की स्थिति में पहुंच चुका है। उन्होने कहा कि संस्थान द्वारा विभिन्न परियोजनाओं का पश्चिम बंगाल में संचालन यह सूनिश्चित करता है कि वानिकी शोध का प्रवाह पश्चिम बंगाल से होकर देश के अन्य भागों में प्रवाहित होगी। हिजली राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय के निदेशक अनुसुया राय ने प्रशिक्षण की व्यवस्था के लिये संस्थान के निदेशक का आभार व्यक्त किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में बतौर प्रशिक्षक संस्थान के वैज्ञानिक–ई, श्री संजीव कुमार, ने “औषधीय पौध की खेती, प्रबंधन एवं प्रदर्शन” विषय पर प्रशिक्षण देते हुए विभिन्न औषधीय पौध का वर्णन करते हुए बताया कि लगभग 18000 प्रकार के औषधीय पौध पाये जाते हैं। कुल 178 प्रजातियों से लगभग 100 मिट्रीक टन उत्त्पादन मे 80% वनों से तथा 20% खेती द्वारा प्राप्त किया जाता है। कच्चा माल के आभाव में बडी–बडी कम्पनियां बंदी की ओर अग्रसर है। हमारा

प्रयास इन 80% वनौषधी का संरक्षण करना प्राथमिकता में होनी चाहिए। उन्होने बताया कि वनौषधी अथवा औषधीय पौध की उपयोग आयुर्वेद, एलोपैथ, यूनानी, होमियोपैथ आदि में होता है। उन्होने बताया कि 4000 से 10000 के करीब प्रजातियो विलुप्ति के कगार पर है जिसमे 28 प्रजाति विलुप्त हो चुकी हैं। दवा का निर्माण कइ औषधीय पौध को मिला कर किया जाता है यदि एक भी कम रह गया तो कारगर दवाई की कल्पना नही की जा सकती। पश्चिम बंगाल की भौगोलिक स्थिति की चर्चा करते हुए बताया कि पहाड़ों, हिमालयों और समुद्रों से घिरा होने के कारण औषधीय पौध उत्पादन की असीम सम्भावनाए हैं लेकिन खेद है कि औषधीय पौध उत्पादन राज्यों में पश्चिम बंगाल का स्थान दिखाई नही देता। उन्होने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि कलकता एक बडी मंडी है अतः औषधीय पौध का उत्पादन एवं बाजार का लाभ उठाकर जीविकोपार्जन को वेहतर बनाया जा सकता है। श्री संजीव कुमार ने प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि आप सभी समिति बनाकर उत्पादन करने से ही लाभ लिया जा सकता है।

संस्थान के मुख्य तकनीकी अधिकारी श्री रविशंकर प्रसाद ने प्रमुख औषधीय पौधों (सतावर, तुलसी, गुडमार, लेमग्रास, भृगराज, पुदिना, सर्पगंधा, अश्वगंधा,एलोवेरा, आदि) का पूर्ण विवरण करते हुए उनके उपयोगी अंग (पत्ती, तना, मूल,जड़ आदि), उत्पादन क्षमता, विभिन्न रोगों में उनके उपयोग को विस्तार से बताया एवं चर्चा की।

संयुक्त वन समिति के सदस्यों के विभिन्न शंकाओं को संस्थान के वैज्ञानिक श्री संजीव कुमार, श्री अनुसुमन दास एवं श्री रवि शंकर प्रसाद ने सरलता से समाधान किया।

धन्यवाद ज्ञापन से पूर्व संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) ने NMPB से वित्तीय सहायता प्राप्त करने की सलाह देते हुये अमृता योजना को भी विस्तार से बताया एवं डा. जोस. टी. मैथ्यु, (PCCF,CAMPA) West Bengal के सहयोग तथा मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद दिया। उन्होने पश्चिम बंगाल के वन विज्ञान केंद्र हिजली खरगपूर नोडल अधिकारी सह वन संरक्षक,श्री अरुण मुखर्जी, राज्य वन प्रशिक्षण विद्यालय, हिजली के निदेशक श्रीमती अनुसुया राय एवं विभिन्न 17 वन प्रमण्डलों के संयुक्त वन समिति के प्रतिभागियों का धन्यवाद कर ते हुये प्रशिक्षक श्री संजीव

कुमार, श्री रवि शंकर प्रसाद, अनुवादक श्री अंसुमान दास की सराहना करते हुये धन्यवाद दिया। संस्थान के विस्तार प्रभाग, सूचना तकनीकी प्रभाग,एवं सम्पदा प्रभाग के सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए कार्यक्रम समापन किया गया।

Date– 24.08.2021

Training on

“Cultivation, Management & Presentation of Medicinal Plants”

CISCO Webex Meetings

https://directorifpranchi.my.webex.com/directorifpranchi.my/j.php?MTID=mfa3a3473ae27f2d96aca7ed2f1a68f6f

Van Vigyan Kendra, Hijli, Kharagpur

West Bengal

INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY, RANCHI

(INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH AND EDUCATION)

(Ministry of Environment Forest and Climate Change ,Govt. of India)

NH-23, Gumla Road, Lalgutwa, Ranchi -8353003 (Jharkhand)

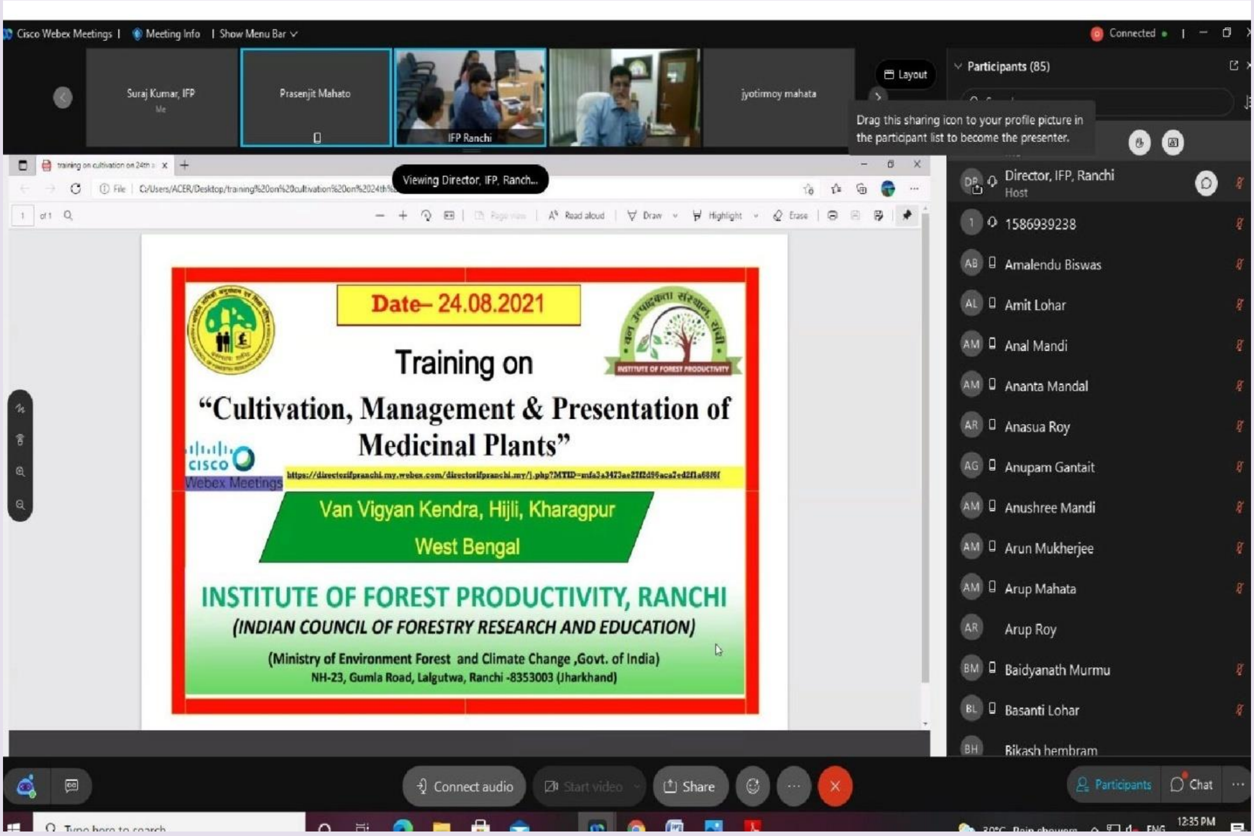

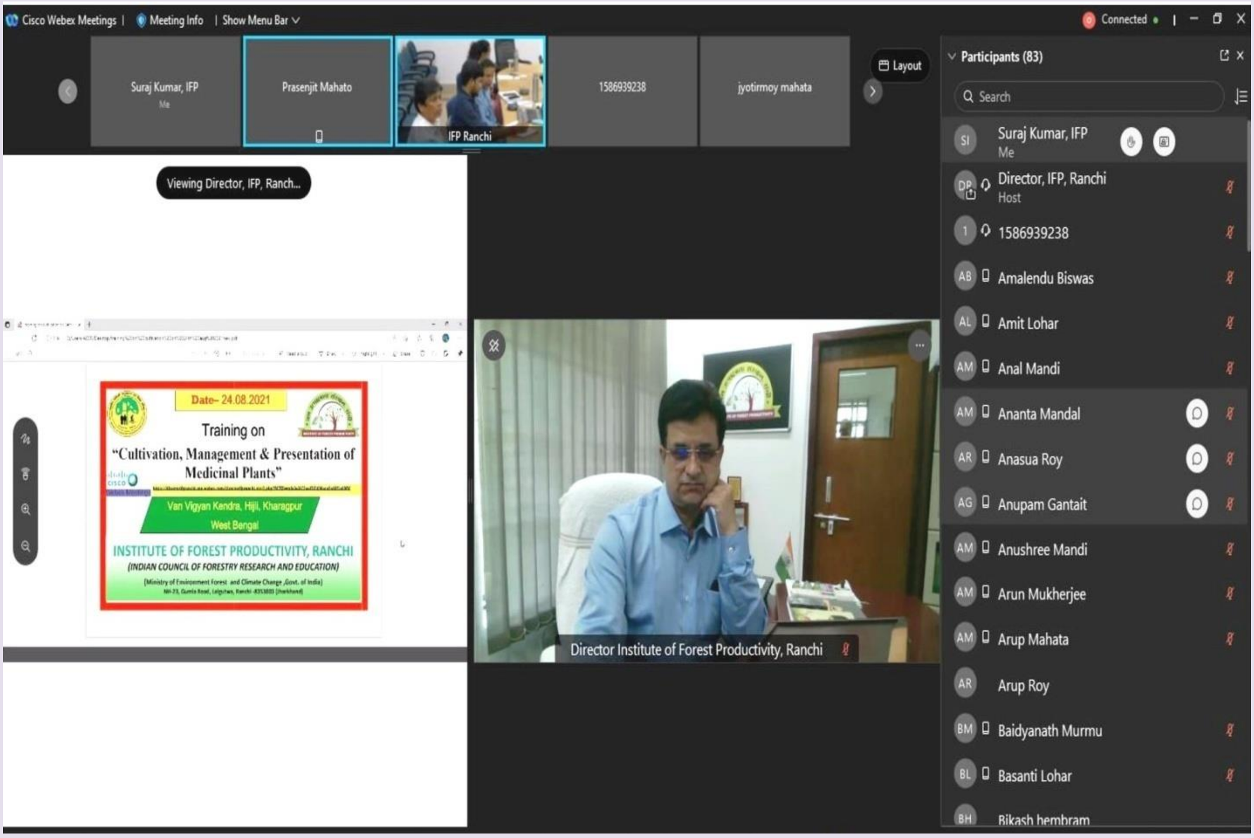

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

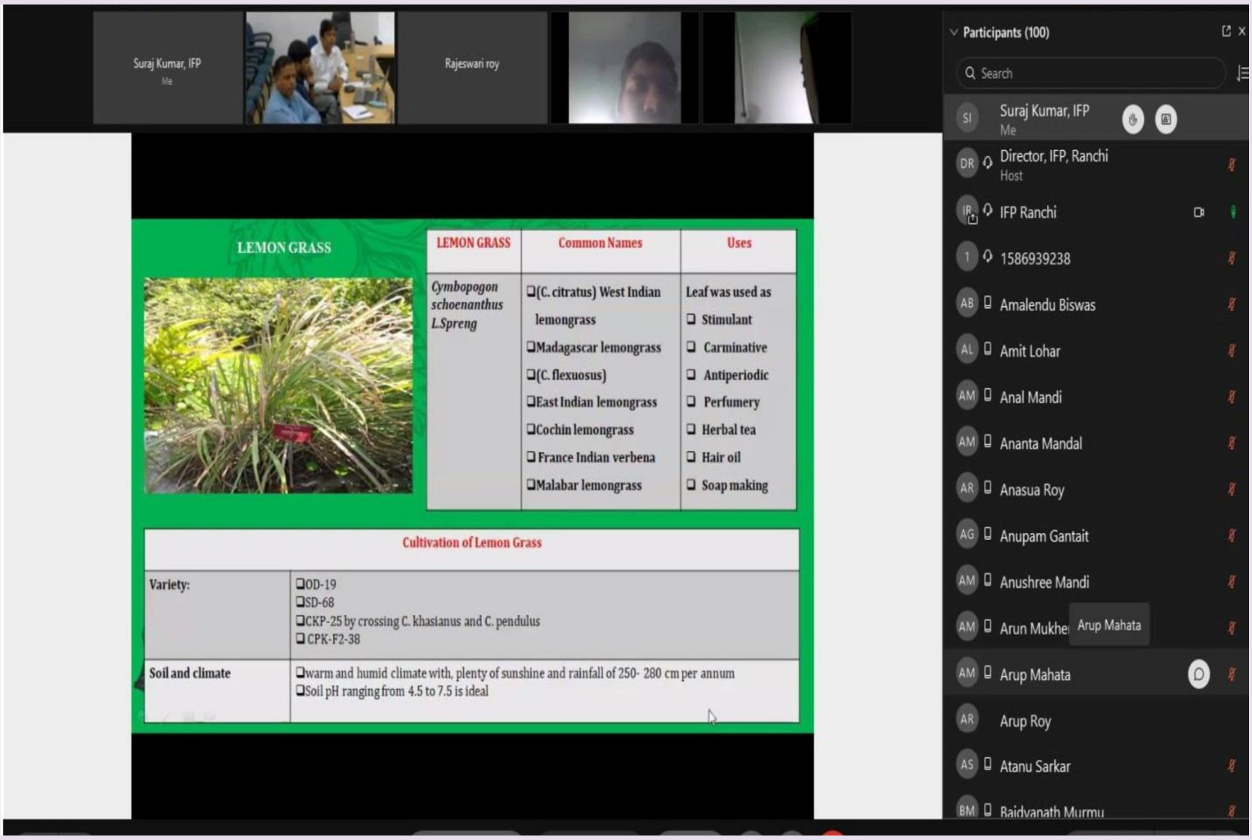

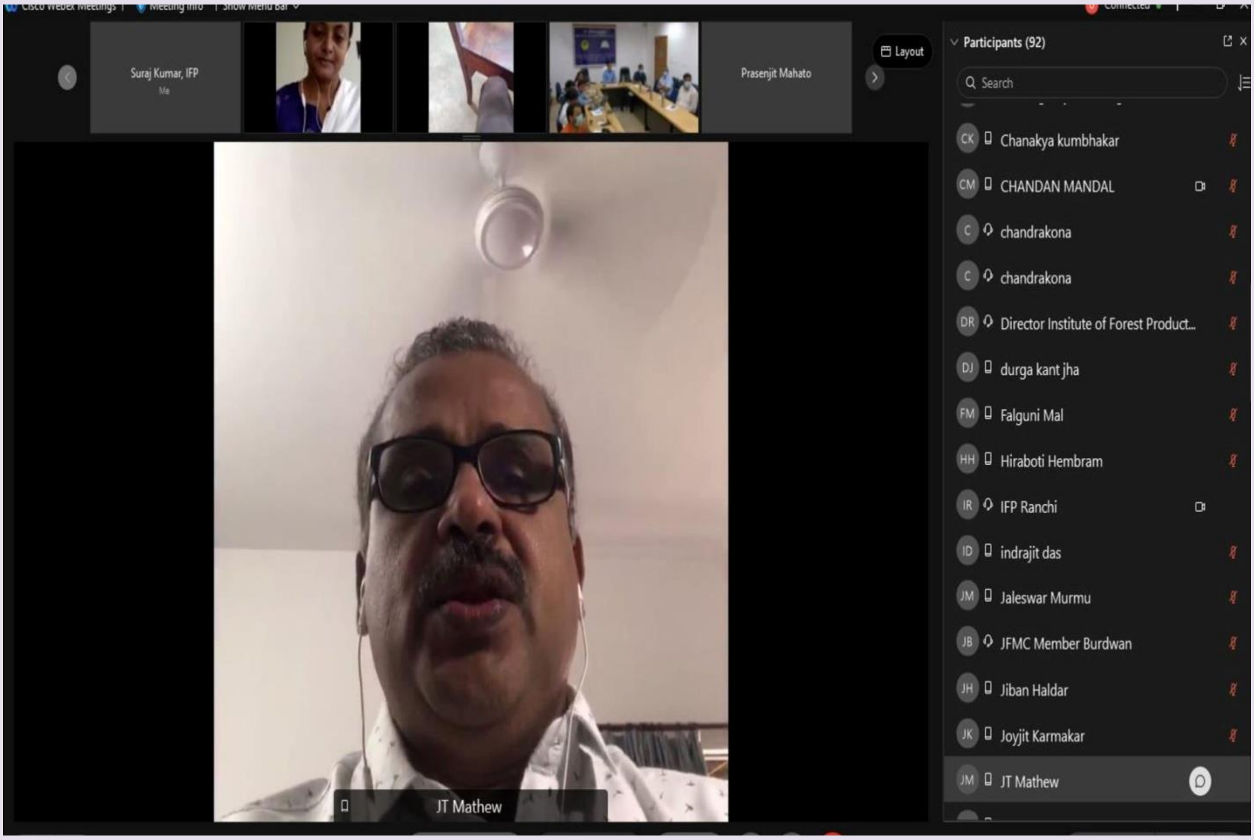

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

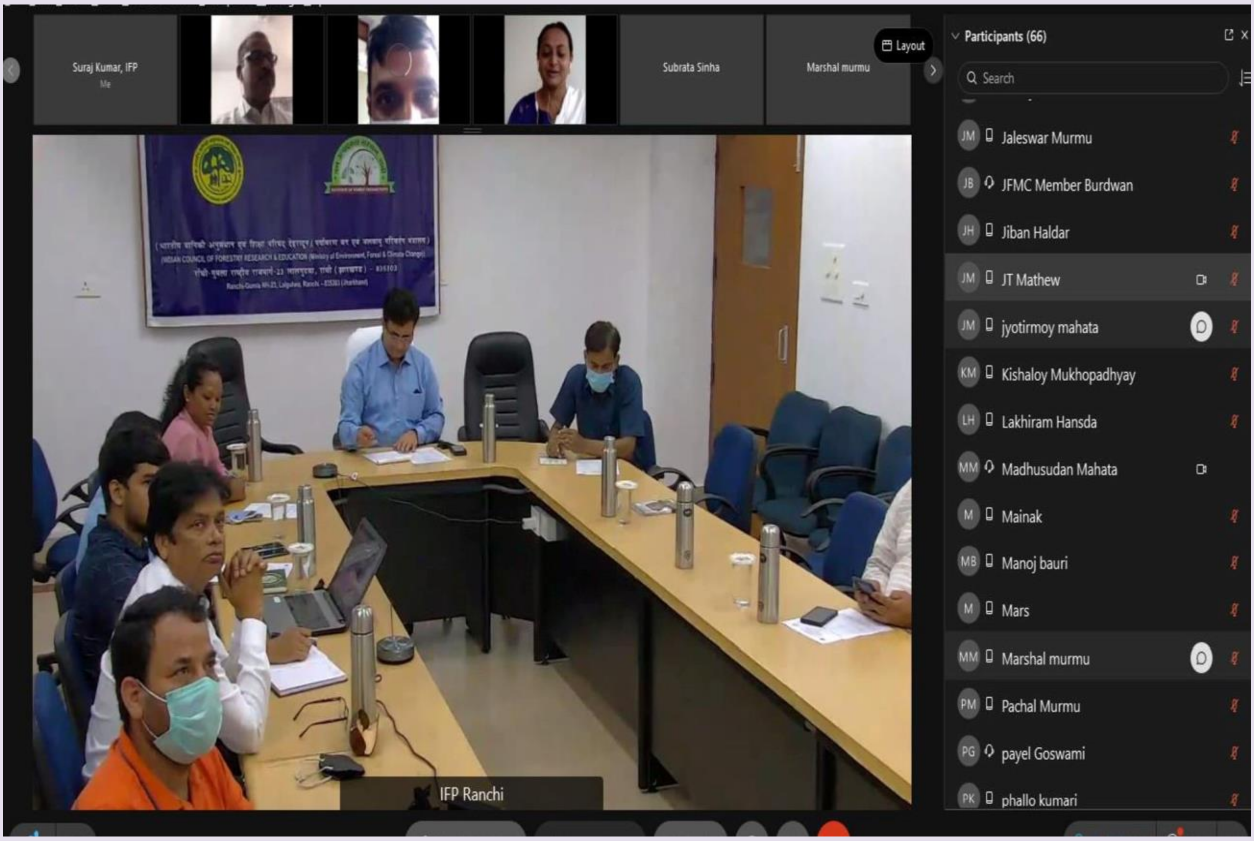

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

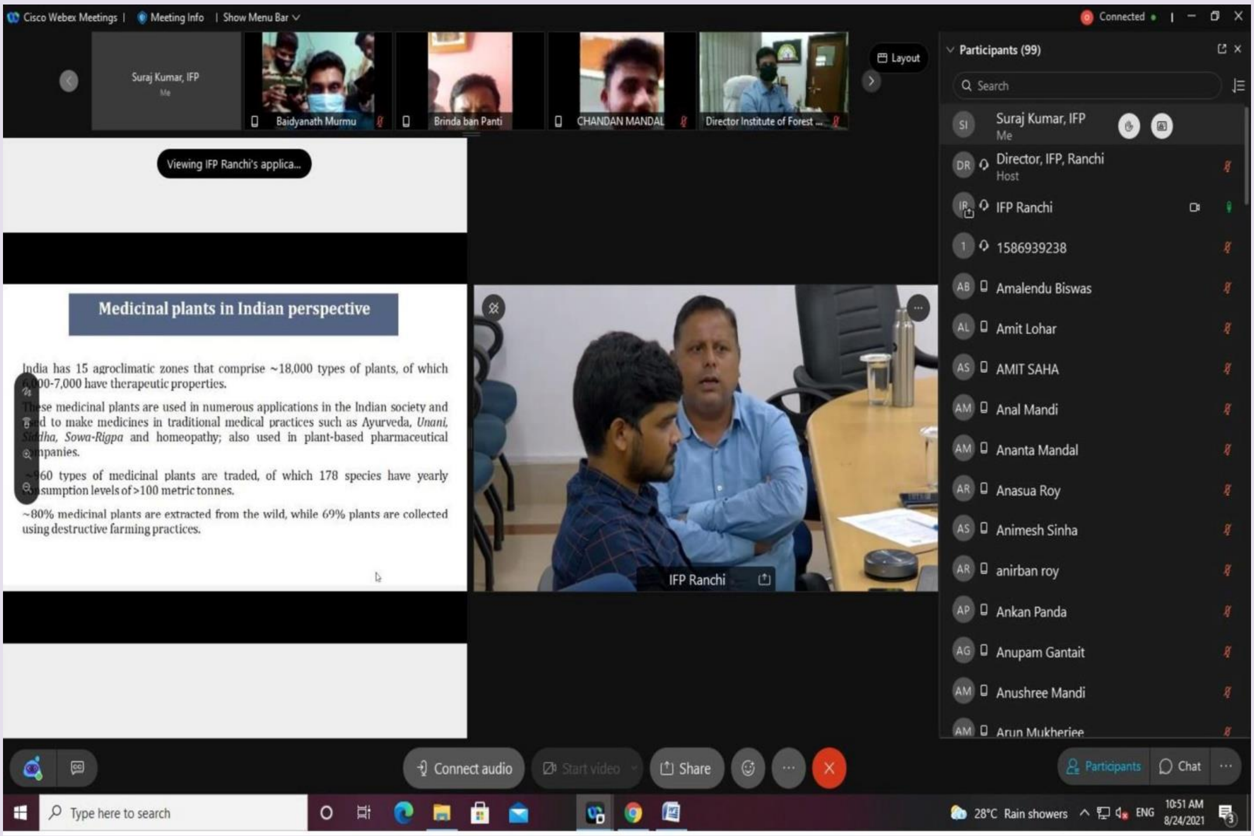

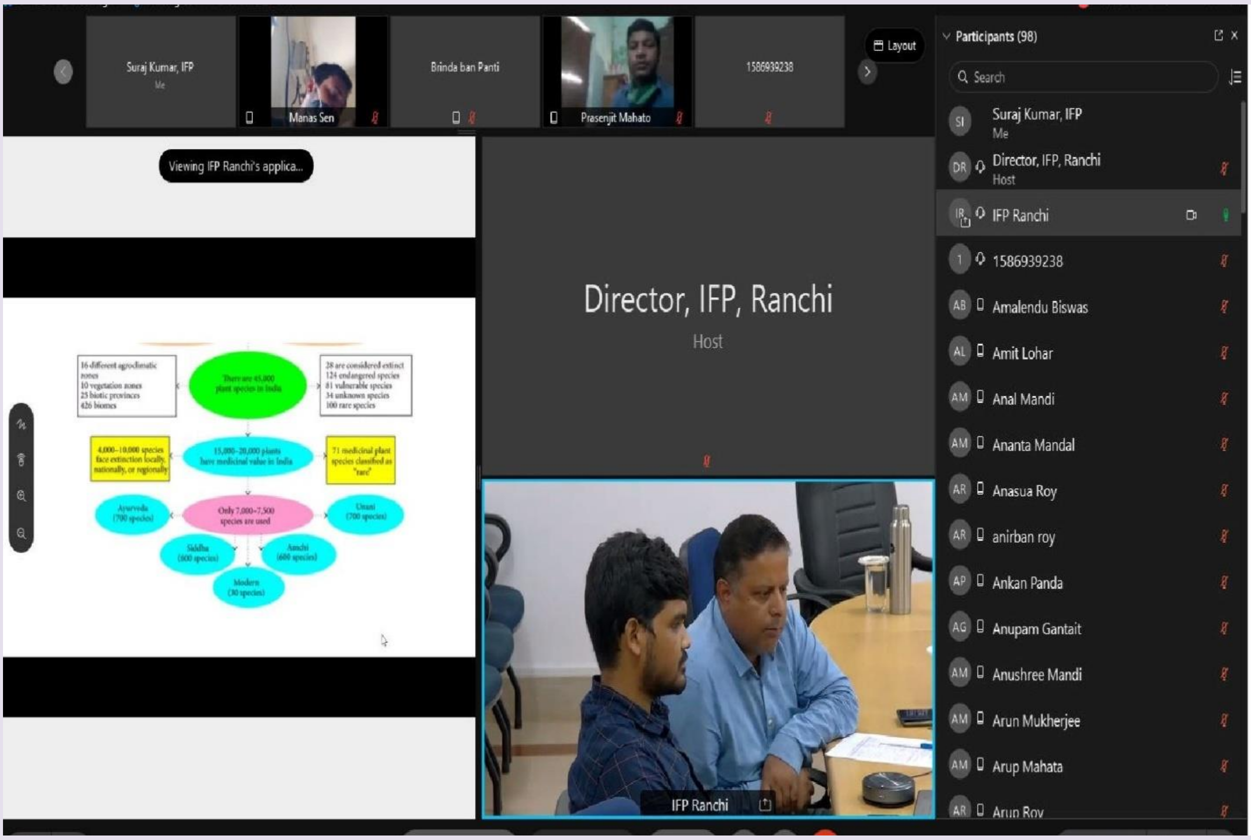

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

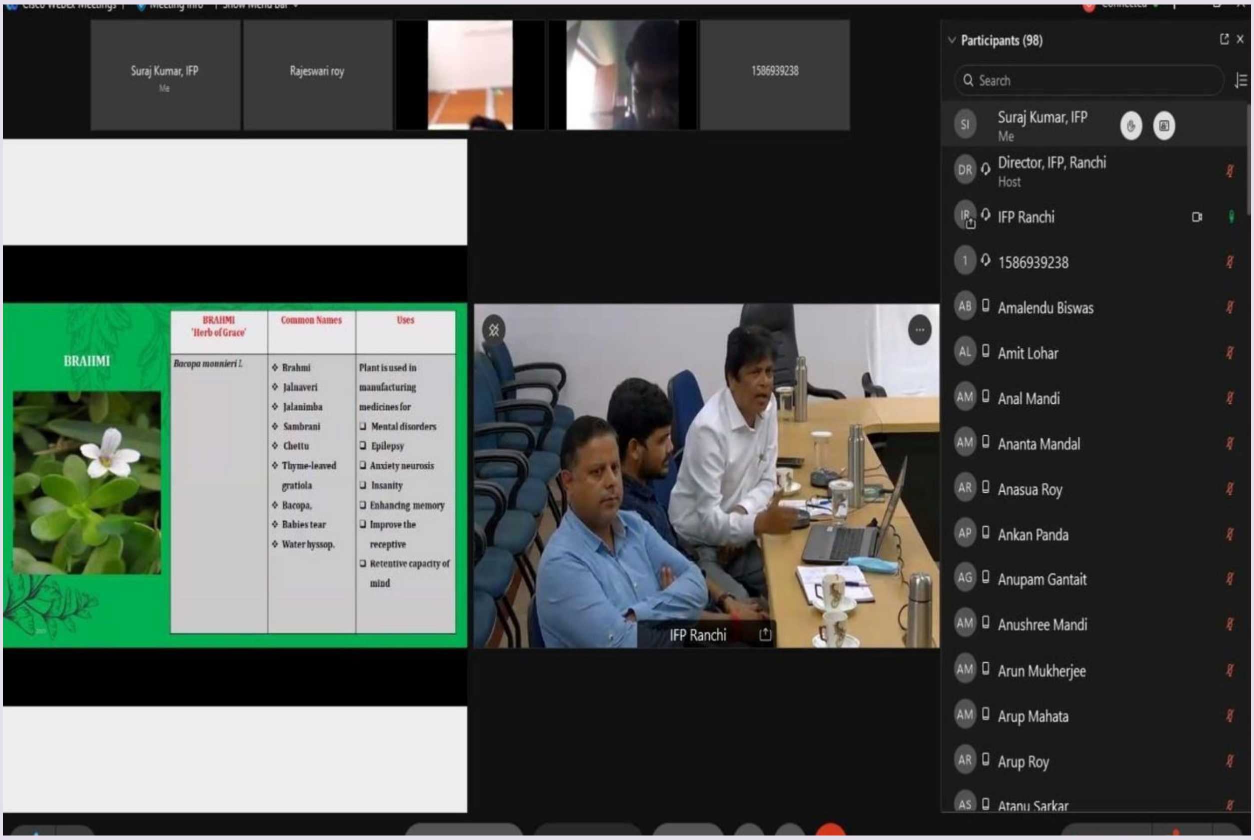

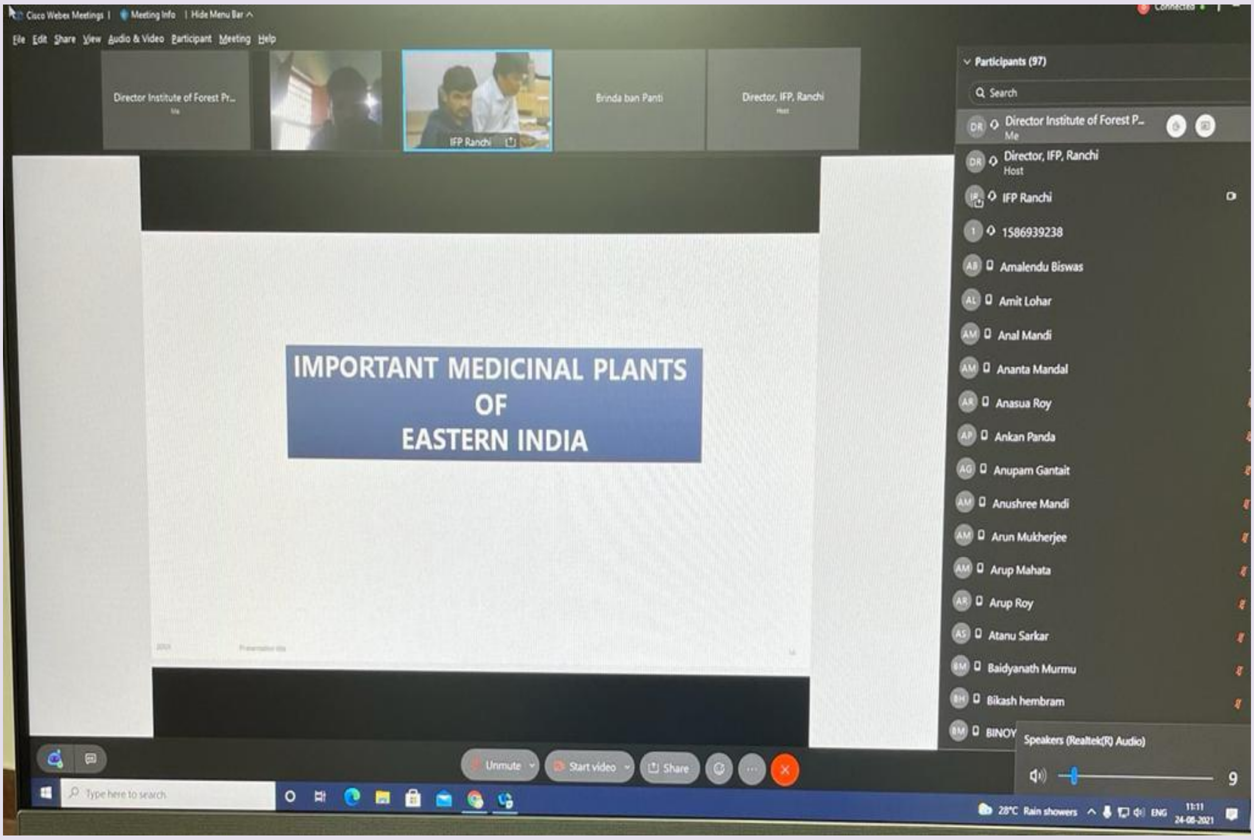

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

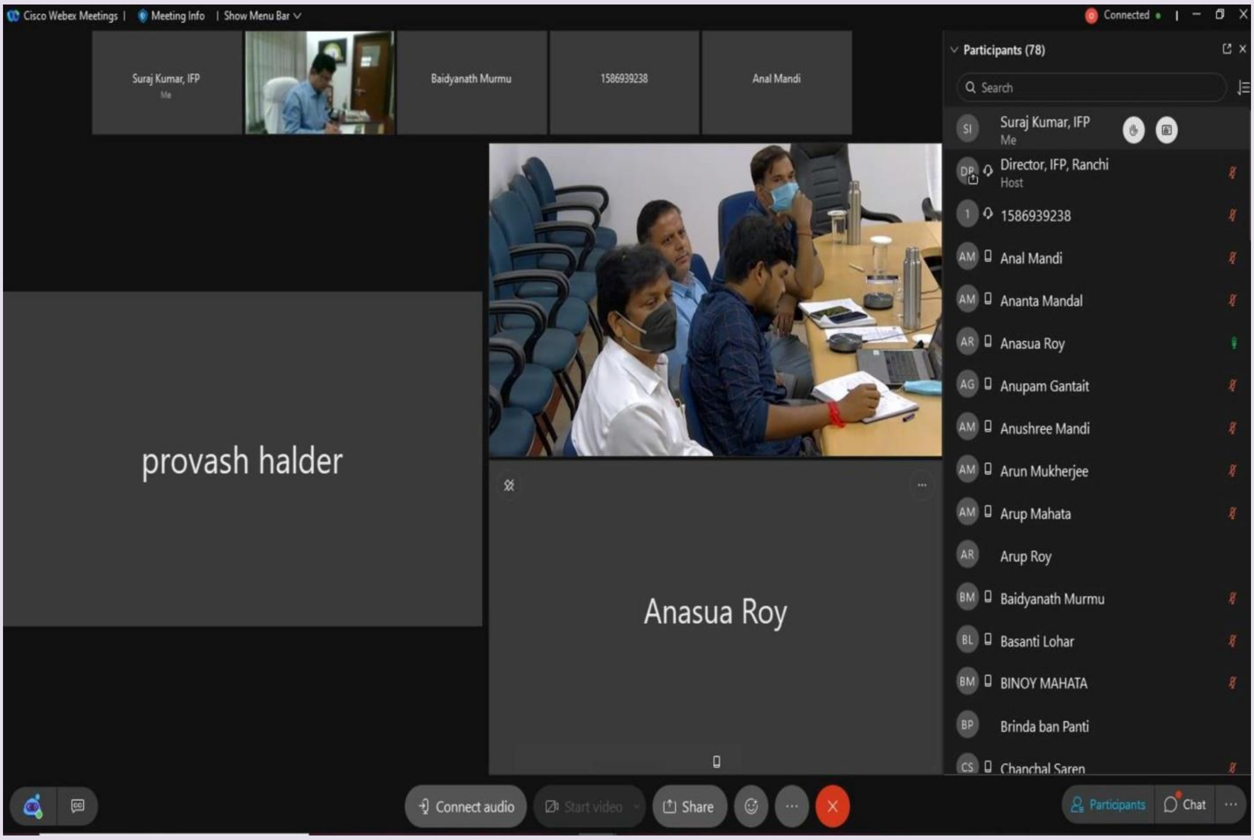

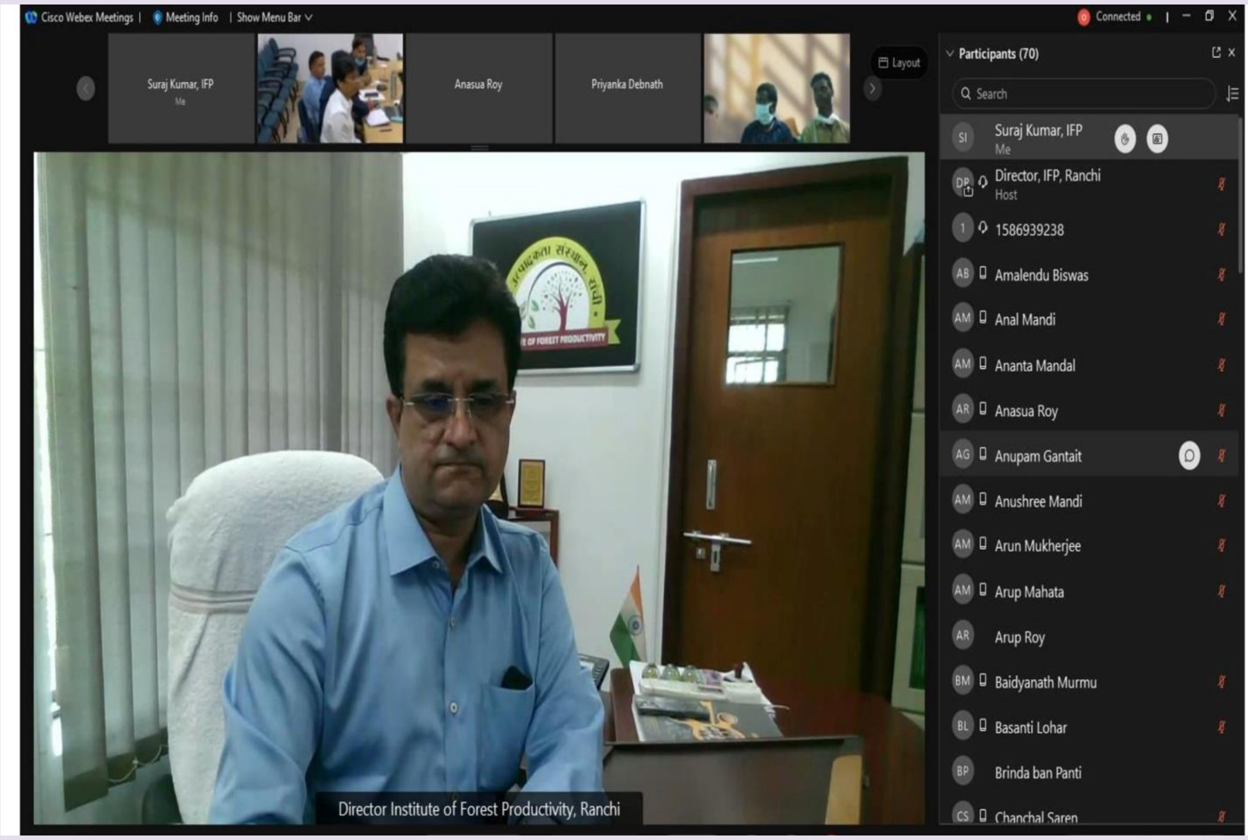

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

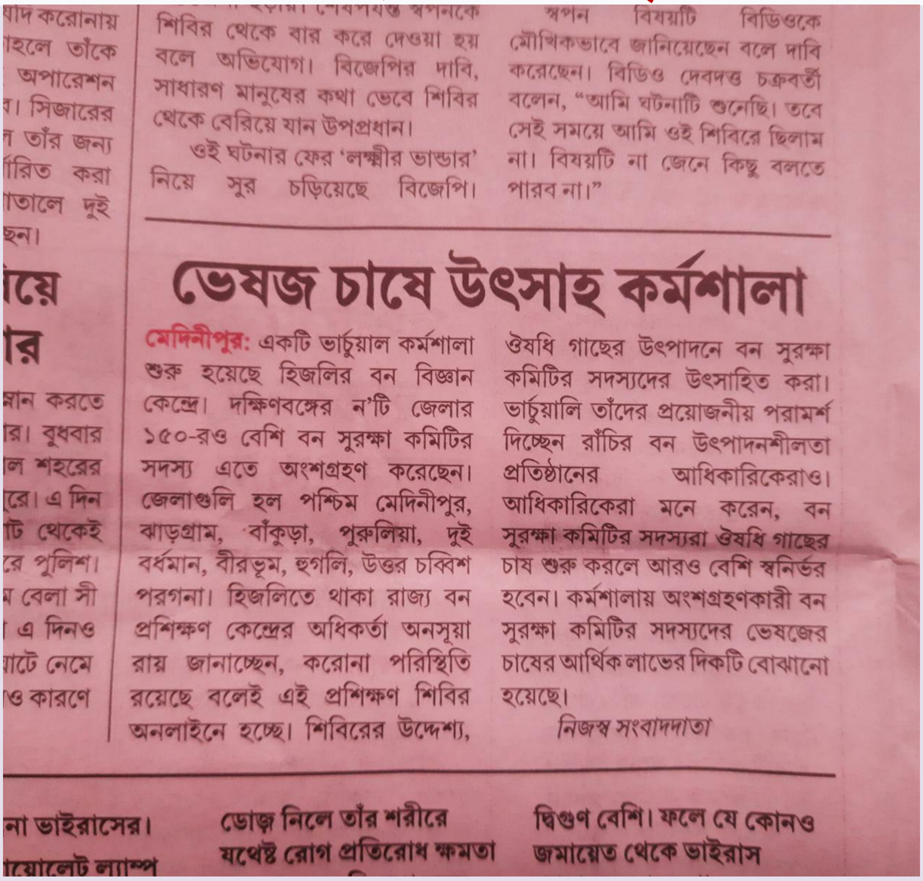

ভেষজ চাষে উৎসাহ কর্মশালা

মেদিনীপুর: একটি ভার্চুয়াল কর্মশালা শুরু হয়েছে হিজলির বন বিজ্ঞান কেন্দ্রে। দক্ষিণবঙ্গের ন'টি জেলার ১৫০-রও বেশি বন সুরক্ষা কমিটির সদস্য এতে অংশগ্রহণ করেছেন। জেলাগুলি হল পশ্চিম মেদিনীপুর, ঝাড়গ্রাম, বাঁকুড়া, পুরুলিয়া, দুই বর্ধমান, বীরভূম, হুগলি, উত্তর চব্বিশ পরগনা। হিজলিতে থাকা রাজ্য বন প্রশিক্ষণ কেন্দ্রের অধিকর্তা অনসূয়া রায় জানাচ্ছেন, করোনা পরিস্থিতি রয়েছে বলেই এই প্রশিক্ষণ শিবির অনলাইনে হচ্ছে। শিবিরের উদ্দেশ্য, ওষধি গাছের উৎপাদনে বন সুরক্ষা কমিটির সদস্যদের উৎসাহিত করা। ভার্চুয়ালি তাঁদের প্রয়োজনীয় পরামর্শ দিচ্ছেন রাঁচির বন উৎপাদনশীলতা প্রতিষ্ঠানের আধিকারিকেরাও। আধিকারিকেরা মনে করেন, বন সুরক্ষা কমিটির সদস্যরা ওষধি গাছের চাষ শুরু করলে আরও বেশি স্বনির্ভর হবেন। কর্মশালায় অংশগ্রহণকারী বন সুরক্ষা কমিটির সদস্যদের ভেষজের চাষের আর্থিক লাভের দিকটি বোঝানো হয়েছে।

নিজস্ব সংবাদদাতা

आयोजित कार्यक्रम का समाचार पत्र में प्रकाशन